अर्पण करने से पहले बोलने वाली प्रार्थना.।। राम ।।

हे चिरंजीवी गुरु पिता श्री हनुमान जी, आज यह आत्मा अर्थात आप, अपने आपको आपके चरणों में समर्पित करने आया हूं प्रभु आपके चरणों में जो पुष्प या फल अर्पित किए गए हैं इन के माध्यम से मैं अपनी कर्म और इच्छाओं को आपके चरणों में समर्पित करता हूं अपनी सभी प्रकार की आसक्तियों को आपके चरणों में समर्पित करता हूं, में अपने पांचों विकारों को जिससे काम,क्रोध,लोभ,मोह, अहंकार कहते हैं उसे भी समर्पित करता हूं यहां तक कि मैं अपनी – में की सुध, अर्थात आपका अहम, की में एक आत्मा हूं , यह भी समर्पित करता हूं, प्रभु मैं ना तो सुख मांगता हूं ना ही दुख ना मुझे अच्छा भ्रम चाहिए ना ही बुरा भ्रम...राम... राम... राम...

याद रहे जब आप तीन बार राम जी के नाम का जाप कर लेंगे मन में उसके बाद श्री हनुमान जी के चरणों में माथा टेक कर उन्हें सिंदूर अर्पित करेंगे पुरुष श्री हनुमान जी के माथे पर सिंदूर लगाएंगे और महिलाएं छोटे से पेंट ब्रश के माध्यम से सिंदूर की डिब्बी में से सिंदूर लेकर श्री हनुमान जी के माथे पर लगाएंगे मूर्ति को स्पर्श नहीं करेंगे...

अर्पण में दी गई सामग्री अर्थात फल या पुष्प का आपको क्या करना है, यदि आपने पुष्प अर्पित किए हैं तो उसे अगले दिन गमले में डाल दे सुबह, यदि फल अर्पित किए हैं तो आप अर्पण करने के बाद पास के मंदिर में जाकर उन्हें रख सकते हैं. ।। राम ।।

ज्ञानी मातंग नौ प्रकार की आसक्तियों से बचकर अपने जीवन का दैनिक कार्य करते हैं 9 प्रकार की आसक्तियों क्या है आपको जानना बहुत महत्वपूर्ण है इससे दूर होकर ही आपको अपने जीवन जीना चाहिए तब माया आपको बंधी नहीं बना पाएगी. ।। राम ।।

9 प्रकार की आसक्तियां

आनंद घृणा दया क्रोध आश्चर्य घिन भय उदासी विश्वास

स्मरण रहे की बाहरी संसार माया का रंगमंच है और आपका एकांत खेले हुए खुशबूदार पुष्पों का बगीचा है यदि आप बाहरी संसार में जा रहे हैं तो आपको ध्यान रखना है कि आप को सुरक्षित अपने बगीचे में पुनः लौटना है. ।। राम ।।